27 0
214
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1321/7017

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 214

आजादी की उमंग अथवा

राष्ट्रीय गान

(कानपुर के शेर हरदोई जेल में)

श्रीयुत गणेश शंकर विद्यार्थी, (कानपुर)

संचालकः—इन्द्र पुस्तकालय, सआदतगंज लखनऊ

आज़ादी की उमंग

अथवा

राष्ट्रीय-गान

हम रहें या न रहें एस रहे याद रहें।
इस कि परवाह किसे शाद कि नाशाद रहें॥
हम उजड़ते हैं तो उजड़ें वतन आबाद रहे।
हो गिरफ्तार तो हो, पर वतन आज़ाद रहे॥

संग्रह कर्ता
पं० कन्हैयालाल दीक्षित "इन्द्र"

प्रकाशक
इन्द्र पुस्तकालय सआदतगञ्ज लखनऊ
प्रथमवार ४०००] सन् १९३० ई० [मूल्य -)

मुद्रक—पं० द्वारकाप्रसाद तिवारी प्रिंटर व प्रोपाइटर
भारत भूषण प्रेस लखनऊ

5/17/1
R. 643 A3

आजादी की उमंग

अथवा

राष्ट्रीय गान

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVT. OF INDIA
No 214
Data 3.12.71

॥ बन्देमातरम् ॥

बोलिये सबमिल महाशय मन्त्र बन्देमातरम् ।
तीनोंभुवन में गूंज जाये शब्द बन्देमातरम् ॥
बनजाय सुखदाई हमारा मन्त्र बन्देमातरम् ।
हो हमारी पाठ पूजा मन्त्र बन्देमातरम् ॥
मन्दिरों मस्जिद गुरुद्वारा व गिरजा हो यही ।
मज़हब बने बस हम सभों का एक बन्देमातरम् ॥
हाथ में हो हथकड़ी और बेड़ियाँ हों पाँवमें ।
गायेंगें उनको बजाकर गीत बन्देमातरम् ॥
इसलिये धिक्कार है सौबार जो कहता नहीं ।
हूँ प्रेम में उन्मत्त होकर मन्त्र बन्देमातरम् ॥
भारत हमारा देव मन्दिर और मस्जिद भी यही ।
हिन्दू मुसलमां हों उपासक मन्त्र बन्देमातरम् ॥
सब ही से यह बोलना थे (इन्द्र) तुमको चाहिये ।
भारत निवासी जयति गान्धी और बन्देमातरम् ॥

कवित्त

चरखा चलाया करे

लुटगये बसन विदेशी पै लट्टू हुये लोग।
भगवान ज्ञानवान गान्धी का भला करे॥
सबको जतायो है बतायो है कतायो सूत।
खद्दर को देखि मैनचेस्टर जला करे॥
धूम हो स्वदेशी की स्वदेश में स्वरूप अब।
दिल हिन्दुओं का प्रेम सांचे में ढला करे॥
राम राम करके सुदिन आये भारत के।
राम करे धाम धाम चर्खा चला करे॥

राष्ट्रीय झण्डा

खद्दर का झण्डा आलम में फहरा दिया गान्धी बाबा ने।
भारत के घर घर में चर्खा चलवा दिया गान्धी बाबा ने॥
सब लोग विदेशी पहिनते थे देशी का ध्यान नहीं कुछ था।
खद्दर का बसन सबके सर पर बँधवादिया गान्धी बाबा ने॥
सर पर था हैट विदेशी चढ़ा टाई कालर में बंधे सब थे।
इन सबको पलभर के अन्दर जलवादिया गान्धी बाबा ने॥
जो लोग गुलाम तबीयत थे गीदड़ बन घर में बैठे थे।
उन सबको शेर बबर क्षण में बनवादिया गान्धी बाबा ने॥
कुछ लोग खिताब के भूखे थे रद्दी पदवी के शैदा थे।
इन सबको गन्दी नाली में फेंकवा दिया गान्धी बाबा ने॥
गाँजा, शराब अरु भंग सभी इनकी अब नहीं ज़रूरत है।
भक्ती में वतन परस्ती की मस्तादिया गान्धी बाबा ने॥
कौंसिल का जाना अब कोई हरगिज़ स्वीकार नहीं करता।
इसकी अब पोल ज़माने में दिखलादिया गान्धी बाबाने॥
एलान हुआ जब दिल्ली में सुनकर कुछ लोग निहाल हुये।

लेकिन कुछ शर्तें उसमें भी लगवादिया गान्धी बाबाने ॥
आये थे साइमन साहेब जब स्वागत की बड़ी तयारी थी।
स्वागत को उनके भारत में रुकवादिया गान्धी बाबाने ॥

विदेशी वस्त्रों की विदा

गजल

टलो यहां से विदेशी वस्त्रो न अब तुम्हारी है चाह हमको।
तुम्ही से भारत हुआ है गारत किया है तुमने तबाह हमको ॥
उद्योग धन्धे सभी हमारे किये हैं आकर विनष्ट तुमने।
मिटा के चर्खे हमारे कर्घे है दी मुसीबत अथाह हमको ॥
कहाँ यहां की महीन मलमल पड़ा है ढाके में आज फ़ाका।
बने निकम्मे जुलाह कोरी मिला ये तुमसे गुनाह हमको ॥
तजेंगे तुमको सजेंगे तनपर पवित्र प्यारा स्वदेशी खद्दर।
हमारे गान्धी महात्मा ने ये दी है कामिल सलाह हमको ॥
रुई हमारी खरीद सस्ती उसी के कपड़े मढ़े हैं हम पर।
हुये धनी तुम गरीब भारत दिखाई गारत की राह हमको ॥
बढ़ाई तुमने बे रोज़गारी बनाया तुमने बेहाल भारत।
पड़े हैं पेटों के आज लाले दिखाता मुश्किल निबाह हमको ॥
कहां है भारत की वह तिजारत रही दलाली ही देशभर में।
जहां दिवाली है अब वहाँपर दिखाती होलीकी दाह हमको ॥
हो धन्य गान्धी महात्मा तुम चलाया चर्खे का चक्र फिर से।
मिली तुम्हीं से स्वदेश हितकी नवीन निर्मल निगाह हमको ॥
करोड़ों चर्खे चलाके कातेंगे सूत सुन्दर पवित्र अपना।
स्वयं बुनेंगे उसीके कपड़े न अब तुम्हारी है चाह हमको ॥

चलाओ चर्खा

निकालो थेका सा बक्स अपना और इसमें बैठे चलाओ चर्खा।
जो इसमें भी बक्स और मिल जाय बीने। कपड़ा चलाओ चर्खा ॥

जो चाहते हो नजात अपनी तो पहनो अपने गले में कफनी।
उठो करो देश की भलाई जो सीखे उसको सिखाओ चर्खा॥
डरे न यूरप के गन से दमभर पुकार दो आज जाके घरघर।
मशीन गन जो तुम्हें दिखाये उसे तुम अपना दिखाओ चर्खा॥
यह गर्द में चर्ख से है चर्खा कभी न इसको ज़लील समझो।
जो चर्खे इक़बाल पर होजाना तो पहिले घरमें चलाओ चर्खा॥
पड़ा है यूरप में ज़लज़ला सा कि हाय सारा तिलस्म टूटा।
यह किसने कानों में आके फूका ज़बाँ को रोको चलाओ चर्खा॥
अगर गुलामी से छूटना हो स्वराज्य की दिलमें हो तमन्ना।
तो खाके मोटा पहन के खद्दर घरों में बैठे चलाओ चर्खा॥
यह हैं हैं चर्खे की क्या है गाया चमनमें बुलबुल चहक रहीहै।
यह बैठी कूके है कोई कोयल कि पी कि खातिर चलाओ चर्खा॥
सुनाहै दाना भी घरमें बैठे चलाया करते हैं अपना चर्खा।
तोतुमको अब उज्र क्याहै बाकी बस आओ तुमभी चलाओ चर्खा॥

बहिष्कार कर दो

उठो हिन्द वालो न रहने कसर दो।
बिदेशी का अब तो बहिष्कार कर दो॥
मयस्सर जहां पेट भर है न दाना।
गुलामी में मुश्किल हुआ सर उठाना॥
मँगा कर बिदेशी वहां धन लुटाना।
तुम्हें चाहिये दिल में कुछ शर्म खाना॥
मिटा देश जाता है इसकी खबर लो।
बिदेशी का अब तो बहिष्कार कर दो॥
मँगाते बिदेशी न अब भी हया है।
कहो देश में शेष रह क्या गया है॥
गरीबों को चूसा न दिल में दया है।

तुम्हे तो यही काशी है या गया है॥
कहो देश द्रोही उन्हें यों नजर दो।
बिदेशी का अब तो बहिष्कार कर दो॥
बहुत सो चुके और लम्बी न तानो।
न यों देश के खून में हाथ सानो॥
बहुत कर लिये पाप अब आप मानो।
चलो देश उत्थान का ठान ठानो॥
स्वदेशी से भारत का भंडार भर दो।
बहिस्कार कर दो बहिस्कार कर दो॥

चर्खे का गीत

जगा दो भारत को आज अपनी स्वराज्य बीणा बजा बजा कर।
बना दो दुश्मन को आज चर्खा पवित्र चर्खा चला चला कर॥
हुआ है चर्खे का नाश जब से हुआ तभी से दरिद्र भारत।
दरिद्र हम हो गये तभी से बिदेशी कपड़े मँगा मँगा कर॥
हजारों बेवाओं बेकसों की इसी के कारण गुजर थी होती।
वही बिना इसके आज बैठी हैं अपनी रोजी गँवा गवाँ कर॥
जुलाहे पंजाब के कभी जो थे सुख से करते व्यतीत जीवन।
वही बने हैं गुलाम गैरों के दूर देशों में आज जाकर॥
बिदेशी वस्त्रों में ही हैं हर साल हम जो सत्तर करोड़ खोते।
यही जो हालत रही तो बैठेंगे शीघ्र सर्वस्व भी गँवा कर॥
उठो उठो हिन्द के सपूतो उठाओ चर्खा चलाओ चर्खा।
बचालो भारतकी लाज "रंजन" स्वदेशी कपड़े बना बना कर॥

गज़ल

न बोलो तुम न बोलो बैठ जावो बे जबाँ होकर।
फ़लक तक आह पहुँचेगी मेरी अबतो धुवाँ होकर॥
मेरी बेइज्ज़ती का तुम तमाशा शौक़ से देखो।
तबाही का नजारा देख लेना तुम निहाँ होकर॥

मुझे डर है कि परमेश्वर कहीं वह दिन न दिखलाये।
बहेंगी खून की नदियाँ यहाँ आबे रवाँ होकर॥
नहीं अपनी मुसीबत का मुझे डर है तो इतना है।
न मिट जाएं वे कुल ही इस क़दर फ़ख़रे ज़बाँ होकर॥
नहीं सुनते अगर तुमहो मेरा माधो तो सुनता है।
बचायेगा मुझे खुद ही ओ मेरा पासबाँ होकर॥
मिटादे तू ऐ दुर्योधन मेरा नामोनिशां लेकिन।
मिटेगा तू भी मेरा एक दिन नामोनिशाँ होकर॥
बहू बेटियों की हो बेइज़्ज़ती जो सामने सबके।
तमाशा देखते हो तुम बुज़ुर्गे खानदाँ होकर॥
समझ लो देखलो अबतो निगाहें फाड़ कर तुम सब।
तुम्हारा मुखही रंगता पाप खुद ही कालिमा होकर॥

स्वदेशी गज़ल

स्वदेशी प्रेम जनता में अगर एक बार हो जाये।
हमारा राज्य भारत में बिना तलवार हो जाये॥
बस्त्र बनने लगें सुन्दर हमारे हिन्द में जिस दिन।
उसी दम मैनचस्टर का नरम बाजार होजाये॥
विदेशी बस्तु लेने से जभी हम हाथ धो बैठें।
तभी आधीन यह अपनी कड़ी सरकार होजाये॥
सुदर्शन चक्र चर्खे को अगर सब हाथ में लेलें।
भयानक तोप भी उससे यहां बेकार होजाये॥
स्वदेशी प्रेम मिल गायें अगर श्री राम भारत में।
बगीचा हिन्द का सूखा अभी गुलजार होजाये॥
न बेचें गर रुई अपनी कभी हम हाथ गैरों के।
बनाना बस्त्र भी उनको बहुत दुश्वार होजाये॥
बचा लें द्रव्य जो अपना बिदेशों के लुटेरों से।

अभी निर्धन हमारा देश यह धन दार होजाये ॥

गजल उपदेश

किस नींद सोरहे हैं हिन्दोस्तान वाले।
खन्दक में गिरपड़े हैं ऊंचे निशान वाले ॥ किस०
राजा तेरे कहां हैं योधा तेरे कहाँ हैं।
दशरथ के राम लक्षिमन बाँकी कमान वाले ॥
ना: ताक़ती पै तेरे आँसू बहा रहे हैं।
क्या सर ज़मीन वाले क्या आसमान वाले ॥ किस०
फ़ैशन बिगड़ गया है खाना खराबियों से।
बरबाद हो चुके हैं सब खानदान वाले ॥
फ़ैशन पै मरमिटे हैं कपड़े बिदेश के हैं।
मलमल पै हाथ धोते ढाके के थान वाले ॥
कहैं 'इन्द्र' अब तो जागो ऐसी कहाँ की नींदें।
आवाज़ दे रहे हैं देशी दुकान वाले ॥

गजल

एक दिन दुनिया में था इक़बाल हिन्दुस्तान का।
आज कल बिगड़ा हुआ है हाल हिन्दुस्तान का ॥
क्या कहूँ अब हाल मुझसे कुछ कहा जाता नहीं।
लुट रहा है मुफ्त में ज़र माल हिन्दुस्तान का ॥
होगी ईश्वर की दया इस दीन भारत पर अगर।
हो नहीं सकता है बाँका बाल हिन्दुस्तान का ॥
हो स्वदेशी उन्नती गर और हों हम एक दिल।
दूर हो दम भर में सब जंजाल हिन्दुस्तान का ॥
देश के हित के लिये गर हर बशर तैयार हो।
माल भी बढ़ता रहा हर साल हिन्दुस्तान का ॥

गजल दादरा

टेक—अब तो खादी से प्रेम बढ़ाओ पिया।
कही मानो बिदेशी न लाओ पिया॥
शैर—अब बिदेशी बस्त्र से पति मुझको नफरत हो गई।
देश की सम्पति बिदेशों को बहुत सी ढो गई॥
जरा भारत की दौलत बचाओ पिया। कही० १॥
शैर—अब स्वदेशी बस्त्र से अपना शरीर सजाइये।
और मेरे भी लिये सारी स्वदेशी लाइए॥
मुझे खादी कि चादर उढ़ाओ पिया॥ कही० २॥
शैर—दीन दुखियों का यही दुख दूर कर सकती पिया।
गर्व भी परदेशियों का चूर कर सकती पिया॥
लाज अंगो की मेरी बचाओ पिया॥ कही० ३॥
शैर—जब तलक जिन्दा रहें तन पर रहे देशी बसन।
बाद मरने के उसी का चाहिए हमको कफन॥
यह संदेशा सबों को सुनाओ पिया। कही० ४।
शैर-चाहते हो देश की गर कुछ भलाई तो "दिनेश"।
तुम स्वदेशी बस्त्र पहनो कर स्वदेशी ही सुवेश॥
बीरता आप अपनी दिखाओ पिया॥ कही० ५॥

गजल खद्दर

खद्दर है मुफलिसों को ज़रदार करनेवाला।
खद्दर है बेकसों को कसदार करनेवाला॥
खद्दर है भूखों मरतों का पेट भरनेवाला।
खद्दर गुलामियों से आज़ाद करनेवाला॥
खद्दर के बल से भारत के लाल तन ढकेंगे।
खद्दर के बल से लाखो मरते हुये बचेंगे॥
खद्दर से देश भरके सबकाम चल सकेंगे।
खद्दर पहन के जैनी हिंसा मिटा सकेंगे।

खद्दर के बल ही अपना पीछा छुड़ा सकेंगे ॥
खद्दर से सब तरह का फैसन घटा सकेंगे ।
खद्दर के वस्त्र चरबी तन से हटा सकेंगे ॥
खद्दर स्वदेशी अपना तो प्राण बनगया है ।
खद्दर ही बीर भारत का मान बनगया है ॥
खद्दर ही भूखे नंगों को काम बनगया है ।
खद्दर गुलामियों का शमशान बनगया है ॥
खद्दर ही ज़िन्दगी का सामान बनगया है ।
खद्दर ही सब तरह का धनधाम बनगया है ॥
खद्दर करोड़ पैंसठ की खान बनगया है ।
खद्दर स्वदेश की अब वो शान बनगया है ॥
खद्दर में बीर लाखों निकलें हैं मरनेवाले ।
तकली चलाके भारत आज़ाद करनेवाले ॥
चरखा चलाके भारत का कोष भरनेवाले ।
हैं बीरबर यही सब निर्भय बिचरनेवाले ॥

हमारा दावा

हमारा हक़ है हमारी दौलत किसी के बाबा का ज़र नहीं है ।
है मुल्क भारत वतन हमारा किसी की खाला का घर नहीं है ॥
हमारी आत्मा अजर अमर है निसार तन मन स्वदेश पर है ।
है चीज़ क्या जेलो गन मशीनें कज़ा का भी हमको डर नहीं है ॥
न देश का जिसमें प्रेम होवे दुखी के दुख से जो दिल न रोवे ।
खुशामदी बनके शान खोवे वो खर है हरगिज बशर नहीं है ॥
हुकूक़ अपने ही चाहते हैं न कुछ किसी का बिगाड़ते हैं ।
तुझे तो ऐ खुदगरज किसी की भलाई मद्दे नज़र नहीं है ॥
हमारी नस नस का खून तूने बड़ी सफ़ाई के साथ चूसा ।
है कौनसी तेरी पालसी वह कि जिसमें घोला जहर नहीं है ॥
बहाया तूने है खूँ उसीका है तेरी रगरग में अन्न जिसका ।

बतादे बेदर्द तू ही हक़ से सितम ये है या कहर नहीं है॥
जो बेगुनाहों को है सताता कभी न वह सुख से बैठ पाता।
बड़े बड़े मिटगये सितमगर क्या इसकी तुझको खबर नहीं है॥
सँभल सँभल अब भी वह लुटेरे है तेरे पापों का अंत आया।
कि ज़ुल्म करने में तूने जालिम ज़रा भी रक्खी कसर नहीं है॥
कमल ये है कौल सायरों का अधर्मी फूला फला न देखा।
घमंड से जिसने सर उठाया बस उसकी गर्दन पै सर नहीं है॥
गज़ब है हम बेकसों की आहें जमीन और आसमाँ हिलादें।
ग़लत है समझे कमल ये समझे कि आह में कुछ असरनहीं है॥

स्वाधीनता की पुकार

न लेंगे चैन दमभर हम बिना स्वाधीनता पाये।
खुशी से दिल कड़ा करके सताओ जितना जी चाहे॥
अभी लायक़ नहीं हो तुम न देने की ये बातें हैं।
मगर हम लेके छोड़ेंगे बनाओ जितना जीचाहे॥
चलाओ डन्डे बन्दूकें निकालो तुम हवस दिलकी।
हमारे भाई से हमको पिटाओ जितना जीचाहे॥
हमारी जान जाये देशहित गौरव समझते हैं।
खरा सोना कसौटी पर कसाओ जितना जीचाहे॥
हमारी गूंजती है जय तुम्हारी जय कहाँ है अब।
तसल्ली के लिये डंडे बजाओ जितना जीचाहे॥
अब हम कर्तव्य पथ से एक तिल भी टल नहीं सकते।
ये घुड़की बन्दरों की सी दिखाओ जितना जीचाहे॥

स्वदेशी प्रचार

गजल दादरा

बहनों कपड़े स्वदेशी मँगाया करो।
उनको पहनो न मन को दुखाया करो॥

शैर—बंडी के लिये छींट न हरगिज मँगाओ तुम।
उसकी जगह स्वदेशी गाढ़े को रँगाओ तुम॥
अपने बच्चों को भी पहनाया करो॥१॥
शैर—लँडन कि बनी मखमलें सारी व लंकलाट।
साटन गिरन्ट डोरियों का करदो बाइकाट॥
अंगलबारी में दिल न फँसाया करो॥२॥
शैर—प्रीतम तुम्हारे जाए के बाजार जब कभी।
लावें विदेशी वस्त्र तो समझावो तुम तभी॥
मेरे बलमा बिदेशी न लाया करो॥३॥
शैर—कहना बिमल का है यही खद्दर को मँगाओ।
जिसके बिछौने ओढ़ने कपड़ों को बनाओ॥
धन भारत का अपने बचाया करो॥ बहनो० ॥४॥

मर जायँगे

देश हित पैदा हुए हैं देश पर मरजायँगे।
मरते मरते देश को ज़िन्दा मगर कर जायँगे॥
हमको पीसेगा फलक चक्की में अपनी कब तलक।
ख़ाक बनकर आँख में उसकी बसर करजायँगे॥
कर रहीं बर्गे खिज़ा को बाद सर सर दूर क्यों।
पेशवाए फस्ले गुल है खुद समर कर जायँगे॥
खाक में हम को मिलाने का तमाशा देखना।
तुख्म रेज़ी से नये पैदा शजर कर जायँगे॥
नौ नौ आंसू जो रुलाते हैं हमें उनके लिये।
अश्क के सैलाब से बरपा हशर कर जायँगे॥
गर्दिशे गरदाब में डूबे तो कुछ परवा नहीं।
बहरे हस्ती में नई पैदा लहर कर जायँगे॥
क्या कुचलते हैं समझ कर वह हमें बर्गे हिना।

अपने ख़ूं से हाथ उनके तर बतर कर जायगे ॥
नक़शे पा है क्या मिटाता तू हमें पीरे फ़लक ।
रहबरी का काम देंगे जो गुज़र कर आयँगे ॥

विदेशी का बाइकाट

तमन्ना है ये मर कर भी चलन अपना स्वदेशी हो ।
मज़ा मरने में आये गर कफ़न अपना स्वदेशी हो ॥
गिला कैसा कहां का रंज हम काले ही अच्छे हैं ।
बुरा क्यों हो जो यह रंगे बदन अपना स्वदेशी हो ॥
विदेशी लैम्प को छोड़ो यह अन्धी रोशनी आई ।
दुआ मांगो चिरागे अंजुमन अपना स्वदेशी हो ॥
यह कोट कालर व नेकटाई चमकते बूट डासन के ।
लिबास अपना स्वदेशी हो बसन अपना स्वदेशी हो ॥
कहां की है यह मोटरकार सोडा लेमोनेड बिस्कुट ।
फ़िटन अपना स्वदेशी हो टिफ़न अपना स्वदेशी हो ॥
दुआ है बाद मरने के स्वदेशी रोएं मय्यत पर ।
कि सर ता पा हरेक अहले वतन अपना स्वदेशी हो ॥
मुहब्बे हिन्द "शादे" मेरठी का कौल है सुन लो ।
ज़बाँ अपनी स्वदेशी हो सखुन अपना स्वदेशी हो ॥

गजल

बदलते हैं नया रँग रोज़ और रंगत निराली है ।
हमारा दिल दुखाने को बला आफ़त की पाली है ॥
दिए हैं पहले से दिल और फिर पीछे से रौलटबिल ।
हमें बर्बाद करने की अजब हिकमत निकाली है ॥
मगर हम भी हैं हाजिर आपकी खातिर दिलोजां से ।
बला हर एक तुम्हारी हमने अपने सर पे डाली है ॥
पसीने पर तुम्हारे हमने अपना खूं बहाया है ।

हमारे क़त्ल करने की सना सिद्दत सम्हाली है ॥
सखुन सच्चा है "सरजू" का सितमगर सोचले दिलमें ।

* * *

स्वदेशी खादी

ये मगरिब वालों को अब तो बना जंजाल खद्दर है ।
बनाने को हमें स्वातंत्र अब खुशहाल खद्दर है ।
घरों में जिन के थी रसमैं चिकन अद्धी व मलमल की ।
हुई अब उन मकानों में कि बिलकुल चाल खद्दर है ॥
दिखाई हमको ये देता चलें अब दिन बिदेशी के ।
कि फैशनएबुलों की भी ये फैशन हाल खद्दर है ॥
मिलों की कल को कर देगा ये मिट्टी मोरचा बनकर ।
बिचारा मन में मैनचेस्टर ने हम को काल खद्दर है ॥
न दिल में अपने यह सोचो निशा है यह गरीबी का ।
हमैं निज देश में दौलत का हमको टाल खद्दर है ॥
हमारा ही बनाया यह हमारे पास है सब कुछ ।
भरा दूकानों गूदामों में हीरा लाल खद्दर है ॥
किसी को अतलसों और मखमलों पर नाज होवेगा ।
मगर हम हिन्द वालों को ये बे मीसाल खद्दर है ॥
हमैं ग्रीषम की गरमी में तपन अपनी बुझाने को ।
हमें ठंढक दिलाने को ये नैनीताल खद्दर है ॥
है बन जाता ए बारिश में हमेशा मोम जामा सा ।
"इन्द्र" सर्दी में यह हमको दुशाला शाल खद्दर है ॥

शहीद गर्जना

भारत न रह सकेगा हरगिज गुलाम खाना ।
आज़ाद होगा होगा आया है वह जमाना ॥
खूंखौलने लगा है हिंदोस्तानियों का ।

कर दंगे जालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना ॥
कौमी तिरंगे झन्डे पर जां निसार अपनी ।
हिन्दू मसीह मुस्लिम गाते हैं यह तराना ॥
अब भेड़ और बकरी बनकर न हम रहेंगे ।
इस पस्तहिम्मती का होगा कहीं ठिकाना ॥
परवाह अब किसे है जैलो दमन कि प्यारे ॥
यक खेल हो रहा है फाँसी पै झूल जाना ॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे ।
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना ॥

गजल

गज़ब हिंद का था दुलारा जवाहर ।
कफ़स में फँसा है बिचारा जवाहर ॥
खुशी का ये मौका था यू० पी० के अन्दर ।
दिलों का था वह चाँद तारा जवाहर ॥
उन्नीस बीस को और इक्कीस अपरैल ।
अगर हाय आता हमारा जवाहर ॥
गुलामी में थोड़े बशर जो फँसे थे ।
बताता उन्हें राह प्यारा जवाहर ॥
हुई आखिरी सबके जुल्मों की साहब ।
इसीसे है करता गँवारा जवाहर ॥
जवाहर कि स्पीच में ये असर है ।
तभी लेंगे मोरचा करारा जवाहर ॥
अरे हिंद वालो जरा सोचो दिलमें ।
खड़े कर रहा है इशारा जवाहर ॥
बिलाती सभी चीज़ नापाक छोड़ो ।
सिखाता ये हमको हमारा जवाहर ॥
सितम जेल में जाके चर्खा चलाना ।

करे हिंद के हित गवारा जवाहर ॥
कहे इन्द्र ये मित्रो प्रतिज्ञा अटल हो ।
रहे हिंद का गुल हज़ारा जवाहर ॥

देश के ग्यारह दावे—गजल

लिखी महात्मा की ग्यारह शर्तों पै ध्यान अब तुमको लाना होगा ।
सहे हैं ज़ुल्मो सितम बहुत कुछ न आगे हमको सताना होगा ॥
नशीली चीज़ों के क्रय व विक्रय को बन्द कर इक्सचेंज की दर ।
दो एक शिलिंग चार पैंसकी कर ये करके तुमको दिखाना होगा ॥
ज़मीन का भी लगान आधा करो कृषक जिसमें दुख न पायें ।
विभाग इसका हमारो कौंसिल के हाथ में अब दिलाना होगा ॥
लगाय रक्खा नमक का कर जो उठालो इसको करो न देरी ।
है फौज पल्टन का खर्च जो कुछ भी आधा उसको घटाना होगा ॥
बड़े २ अफ़सरों कि तनख्वाह आधी करदो या और कुछ कम ।
घटी हुई आमदनी से अपना ही खर्च तुमको चलाना होगा ॥
स्वदेशी कपड़े की उन्नती के लिये बिदेशी बसन के ऊपर ।
लगाओ कर उसप चोगुना तुम नियम ये ऐसा बनाना होगा ॥
जहाज़ व्यापार के लिये जो हमारे चलते समुन्द्र में है ।
लगाया उन पै जो कर है तुमने वह जल्द तुमको हटाना होगा ॥
जिन्हें कि हत्या के जुर्म में हैं मिली सज़ा उनको छोड़ करके ।
जो राजनैतिक हमारे कैदी हैं उनकी बन्दी कटाना होगा ॥
जो राजनैतिक के मामले चल रहे हैं उनको उठालो साहब ।
व एकसौ चौबीस कि सारी लगभग दफायें रद्दी कराना होगा ॥
हमारे लीडर विदेश को जा पठाय ज़बरन गये हैं फौरन ।
स्वदेश आने का हुक्म उनके लिये भी तुमको सुनाना होगा ।
विभाग खुफिया पुलिस का तोड़ो या उसपे अधिकार हो हमारा ।
व आत्मरक्षा के हेतु हमको भी चेम्पियन गन बँधाना होगा ॥
विमल ये कहते हैं लार्ड इरविन से कहना गान्धी का पूरा करदो ।
तो अपनी प्रजा के कदमों में शीश तुमको झुकाना होगा ॥

❋ ज्वर दमन ❋

यह कई साल से प्रति वर्ष हज़ारों रोगियों को ज्वर मुक्त करने में अचूक साबित हुआ है। मलेरिया बुखार के ज़माने में सब से ज़्यादह गुणकारी ज्वर दमन ही साबित हुआ, इसके इस्तेमाल करने से जूड़ी एकतरा, रोज़ आनेवाला, तिज़ारी, चौथिया, मलेरिया फ़ीवर, फ़सली बुखार, इन्फ़्लुएन्ज़ा बुखार, से बढ़ी हुई तिल्ली तत्काल दूर होती है। क़ीमत ॥=) छोटी =)

दद्रु दमन

दाद और खुजली को चौबीस घन्टे में जड़ से खोने वाली दवा क़ीमत ।)

ब्राह्मी आंवला तेल

केस और मस्तिष्क रोगों को तत्काल दूर करता है यह तेल ब्राह्मी तथा आँवला आदि अनेक सुगंधित और अत्यन्त गुणकारी औषधियों के योग से तैयार होता है नित्य प्रति इसके लगाने से केश घुंघराले काले और मुलायम होजाते हैं सिरदर्द खुश्की आदि का दूर करके दिमाग को ठंढा और चित्त प्रसन्न करता है कीमत ६ औंस की बोतल का ॥)

पं० जगन्नाथ मिश्र वैद्य भूषण
मालिक श्रीजगदीश औषधालय,
डालीगंज, लखनऊ

सिर्फ रायटल पेज अपर इंडिया प्रेस, लखनऊ में छपा